जंहिं समुझ्यो सूतु, आतम देव अनूप जो,
सो बिना भेख भभूत जे, सामी थियो अवधूतु,
उथी अविद्या भूतु, भगो तंहिंजे घर मों.

सामी साहब ज्ञानी पुरुष का लक्षण बताते हुए कहते हैं कि जिस मनुष्य ने अनुपम आत्मतत्व (अंतरात्मा, परमात्मा) का सूत्र (तत्व, सार, रहस्य) समझ लिया है, वह भगवे वस्त्र धारण किये बिना, भभूत लगाये बिना ही अवधूत (सिद्ध मार्ग का योगी) बन जाता है। (अपने हृदय में परमात्मा को पहचानने वाले) उस मनुष्य के हृदय रूपी घर से अविद्या रूप भूत भाग जाता है।

आदिनाथ (शंकर भगवान) से निर्मित मार्ग को 'सिद्धमार्ग' कहा जाता है। इस मार्ग के योगी पुरुष को 'अवधूत' कहते हैं। वर्णाश्रम के कर्त्तव्यों को छोड़कर केवल आत्मा को ही देखने वाले 'अवधूत' कहे जाते हैं। अवधूतों या योगियों की साधना के नियम बड़े ही कड़े होते हैं। अर्थात् यह साधना कठोर होती है। तंत्रयोग द्वारा कुंडलिनी को जाग्रत कर शिव-शक्ति की समरसता/एकरूपता साधने का प्रयत्न किया जाता है। इस कारण इन्हें 'सिद्ध' कहते हैं।

यह तो हुई सिद्धों, अवधूतों की बात। किन्तु वेदांत के व्याख्याता सामी साहब कहते हैं कि परमेश्वर को पाने के लिए, आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए मोक्ष-मुक्ति के लिए अथवा अविद्या के बंधनों से स्वयं को मुक्त करने के लिए सिद्ध-मार्ग को अपना कर अवधूत बन कर कठोर साधना करने की आवश्यकता नहीं है। अर्थात् सिद्ध-मार्ग के कठोर नियमों का पालन किये बिना भी अवधूत बना जा सकता है। योगशास्त्र के नियमों का पालन किये बिना भी योगी बना जा सकता है। आवश्यकता है एक सूत्र या तत्त्व को समझने की। वह तत्त्व यह है कि परमात्मा हमारे भीतर है, परमात्मा का निवास कण-कण में है। परमेश्वर को ढूँढने के लिए कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं है। वह आत्म-देव, अंतरात्मा, परमात्मा हमारे हृदय में ही है । यह सूत्र या तत्त्व जिस मनुष्य ने समझ लिया है, उस मनुष्य के मन रूपी घर से अविद्या/अज्ञान रूपी भूत भाग जाता है। फलतः उसका मन विकाररहित बन जाता है, निर्मल, शुद्ध एवं पवित्र बन जाता है। इस कारण वह परमेश्वर के दर्शन करने का और परम सुख-शांति का अनुभव करने का अधिकारी बन जाता है।

तन को जोगी सब करे, मन को करे न कोय।
सब सिद्धि सहजै पाइके, सो मन जोगी होय॥

■